







देश में मुद्रदे की कमी नहीं है, एक से बढ़कर एक मुद्रदे है। सब गार्थीय मुद्रदे हैं। सबको बड़ा मुद्रदा बनाया जा सकता है लेकिन विपक्ष की कमज़ोरी है कि किसी एक मुद्रदे पर टिकता नहीं है। अब जिसी मुद्रदे की बात करता है तो कल किसी और मुद्रदे की बात करने लगता है। वह आइए किसी मुद्रदे को न बड़ा मुद्रदा बना सकता है, न ही जनता को प्रभावित कर पाता है। विपक्ष को वह बहम है कि वह जो कहेगा, जनता उसे सच मान लेगी। सोशल मीडिया के जमाने में किसी का छूट कुछ ही मिनटों में समान आ जाता है। जनता जानता है कि विपक्ष छूट बोल रहा है, वह जैसा बता रहा है, वैसा ही हो गया है। कांग्रेस के तीन राजनें का चुनाव उठाने के बाद उसके कोई मुद्रदे नहीं हैं। जनता ने तो फैसला दे दिया कि वह पीएम मोदी के बादों पर भरोसा करती है, कांग्रेस के बादों पर उसको कोई भरोसा नहीं है। इससे कांग्रेस को बड़ा झटका लगा था। संसद में भी वह कोई मुद्रदा जोर से नहीं उठा पा रही थी। किसमत से उसे संसद की सुरक्षा का मुद्रदा मिल गया जब दो युवक योजना बनाकर संसद में सुधर गए और संसद के भौतिक स्थान के बाहर बैठ बैठते हैं। वह मुद्रदा उसे बैठ बैठते हैं। वह आइए किसी मुद्रदे को न बड़ा मुद्रदा बना सकता है था। लेकिन विपक्ष के लिए बड़ा मुद्रदे को लेकर स्थित नहीं था। उसे संसद के भौतिक रहकर इस मुद्रदे को नियमानुसार उठाना था। रोज उठाना था। हांगमा, बहिष्कार जो भी करना था। नियमानुसार करना था। संसद की सुरक्षा को मुद्रदे को छोड़ना था न ही संसद को छोड़ना था। संसद की सुरक्षा को बहुत कुछ ही मिनटों में बड़ा मुद्रदा बनाने के लिए एक संसद को बाहर बड़ा अंदोरा लोन तो कर ही नहीं करना क्योंकि वह बैठा हुआ है। वह एक देश के लिए संसद में पेश करता है तो जनता जानता पर बस तो इसे एक अंदर संसद के अंदर रहना था। वह अपनी गलियों से संसद के बाहर हो गए, वह मान कर चल रहे थे कि विपक्ष के 146 संसदीयों के नियमानुसार के सरकार मुश्यवित में फंस गई है। ऐसा बिलकुल नहीं था, हकीकत में सरकार अपने बिल संसद से पास करने के लिए चाहती थी कि विपक्ष के 146 संसदीयों में न रहे रहे भी थीं। इन्होंने बहुत संक्षया में हो रहे वह बिल को रोक नहीं सके। संसद के इस सत्र में बहुत सारे अहम नाम पास करने पर रहा, तो क्यों फेंका गया? जनता को सच का बाहर फेंका गया तो क्यों फेंका गया? जनता को आज विपक्ष को छूट ज्यादा दिन नहीं चलता है।

## अटल बिहारी वाजपेयी की वे उपलब्धियां जिनसे मजबूत हुआ भारत

आज देश के पूर्व पीएम और भारत रूप अटल बिहारी वाजपेयी की जयती है। वीजेपी सरकार अटल बिहारी के जन्मदिवस को सुशासन दिवस के रूप में मनाती है। उनकी जयती के मौके पर हम अटल बिहारी की उन उपलब्धियों का जिक्र करेंगे जिनसे भारत मजबूत हुआ। इसमें आपको वह समझने में आसानी होगी कि आखिर अटल बिहारी के जन्मदिवस के सुशासन दिवस के रूप में मनाया जाना क्यों सही है।

**स्वर्णिम चतुर्भूज और ग्राम सड़क योजना-**वाजपेयी की सबसे बड़ी उपलब्धियों में उनकी महत्वाकांक्षी सड़क परियोजनाओं स्वर्णिम चतुर्भूज और प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना को सबसे ऊपर रखा जाता है। यह वाजपेयी को जिक्र करेंगे जिनसे भारत मजबूत हुआ। इसमें आपको वह समझने में आसानी होगी कि आखिर अटल बिहारी के जन्मदिवस के सुशासन दिवस के रूप में मनाया जाना क्यों सही है।



पोखरण में भारत का परमाणु परीक्षण-साल 1998, प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने राजस्थान के पोखरण में परमाणु परीक्षण कर दिया था। अचानक किए गए इन परमाणु परीक्षणों से अमेरिका, पाकिस्तान समेत कई देश दूंग रह गए थे। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एप्पेंज अद्वितीय कलाम की अगुआई में यह मिशन कहूँ इस तहसे अंजाम दिया गया कि अमेरिका समत पूरी दुनिया को इसकी भनक तक नहीं लगी। अमेरिकी खुफिया एंजेसी छूट भारत पर नजर रखे हुए थीं और उसके पाकिस्तानी रखने के लिए एक सैटलाइट लगाए थे। हालांकि भारत ने यह उपर्युक्त सैटलाइटों को चक्रमा देते हुए परमाणु परीक्षण कर दिया। हालांकि, एक कार्यक्रम के दौरान अटल बिहारी ने इस परमाणु परीक्षण का श्रेय पीएम नरसिंहा राव को दिया था। वाजपेयी की सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय टेलिफोनी में विदेश संचार



निगम लिमिटेड के एकाधिकारी को पूरी तरह खत्म कर दिया था।

**कांगिल युद्ध में विजय-**अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार के दौरान हुए करियरल युद्ध में भारत ने विजय हासिल की और दुनिया को यह सदर्शन दिया कि भारत द्वाकरने वालों में से इन्होंने कर्मान अदेश दिया था।

लिए मुआवजे की घोषणा की। साथ ही शहीद सैनिकों के अंतिम संस्कार को सार्वजनिक तौर पर करने का फैसला लिया। इन जींजों का अंतर्राष्ट्रीय दबाव बना। तलाकालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल बिलटन ने पाकिस्तान के पीएम नवाज शरीफ को समन किया था और उन्हें सेना हताने का आदेश दिया था।

लिए मुआवजे की घोषणा की। साथ ही शहीद सैनिकों के अंतिम संस्कार को सार्वजनिक तौर पर करने का फैसला लिया। इन जींजों का अंतर्राष्ट्रीय दबाव बना। तलाकालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल बिलटन ने पाकिस्तान के पीएम नवाज शरीफ को समन किया था और उन्हें सेना हताने का आदेश दिया था।

लिए मुआवजे की घोषणा की। साथ ही शहीद सैनिकों के अंतिम संस्कार को सार्वजनिक तौर पर करने का फैसला लिया। इन जींजों का अंतर्राष्ट्रीय दबाव बना। तलाकालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल बिलटन ने पाकिस्तान के पीएम नवाज शरीफ को समन किया था और उन्हें सेना हताने का आदेश दिया था।

लिए मुआवजे की घोषणा की। साथ ही शहीद सैनिकों के अंतिम संस्कार को सार्वजनिक तौर पर करने का फैसला लिया। इन जींजों का अंतर्राष्ट्रीय दबाव बना। तलाकालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल बिलटन ने पाकिस्तान के पीएम नवाज शरीफ को समन किया था और उन्हें सेना हताने का आदेश दिया था।

लिए मुआवजे की घोषणा की। साथ ही शहीद सैनिकों के अंतिम संस्कार को सार्वजनिक तौर पर करने का फैसला लिया। इन जींजों का अंतर्राष्ट्रीय दबाव बना। तलाकालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल बिलटन ने पाकिस्तान के पीएम नवाज शरीफ को समन किया था और उन्हें सेना हताने का आदेश दिया था।

लिए मुआवजे की घोषणा की। साथ ही शहीद सैनिकों के अंतिम संस्कार को सार्वजनिक तौर पर करने का फैसला लिया। इन जींजों का अंतर्राष्ट्रीय दबाव बना। तलाकालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल बिलटन ने पाकिस्तान के पीएम नवाज शरीफ को समन किया था और उन्हें सेना हताने का आदेश दिया था।

लिए मुआवजे की घोषणा की। साथ ही शहीद सैनिकों के अंतिम संस्कार को सार्वजनिक तौर पर करने का फैसला लिया। इन जींजों का अंतर्राष्ट्रीय दबाव बना। तलाकालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल बिलटन ने पाकिस्तान के पीएम नवाज शरीफ को समन किया था और उन्हें सेना हताने का आदेश दिया था।

लिए मुआवजे की घोषणा की। साथ ही शहीद सैनिकों के अंतिम संस्कार को सार्वजनिक तौर पर करने का फैसला लिया। इन जींजों का अंतर्राष्ट्रीय दबाव बना। तलाकालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल बिलटन ने पाकिस्तान के पीएम नवाज शरीफ को समन किया था और उन्हें सेना हताने का आदेश दिया था।

लिए मुआवजे की घोषणा की। साथ ही शहीद सैनिकों के अंतिम संस्कार को सार्वजनिक तौर पर करने का फैसला लिया। इन जींजों का अंतर्राष्ट्रीय दबाव बना। तलाकालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल बिलटन ने पाकिस्तान के पीएम नवाज शरीफ को समन किया था और उन्हें सेना हताने का आदेश दिया था।

लिए मुआवजे की घोषणा की। साथ ही शहीद सैनिकों के अंतिम संस्कार को सार्वजनिक तौर पर करने का फैसला लिया। इन जींजों का अंतर्राष्ट्रीय दबाव बना। तलाकालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल बिलटन ने पाकिस्तान के पीएम नवाज शरीफ को समन किया था और उन्हें सेना हताने का आदेश दिया था।

लिए मुआवजे की घोषणा की। साथ ही शहीद सैनिकों के अंतिम संस्कार को सार्वजनिक तौर पर करने का फैसला लिया। इन जींजों का अंतर्राष्ट्रीय दबाव बना। तलाकालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल बिलटन ने पाकिस्तान के पीएम नवाज शरीफ को समन किया था और उन्हें सेना हताने का आदेश दिया था।

लिए मुआवजे की घोषणा की। साथ ही शहीद सैनिकों के अंतिम संस्कार को सार्वजनिक तौर पर करने का फैसला लिया। इन जींजों का अंतर्राष्ट्रीय दबाव बना। तलाकालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल बिलटन ने पाकिस्तान के पीएम नवाज शरीफ को समन किया था और उन्हें सेना हताने का आदेश दिया था।

लिए मुआवजे की घोषणा की। साथ ही शहीद सैनिकों के अंतिम संस्कार को सार्वजनिक तौर पर करने का फैसला लिया। इन जींजों का अंतर्राष्ट्रीय दबाव बना। तलाकालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल बिलटन ने पाकिस्तान के पीएम नवाज शरीफ को समन किया था और उन्हें सेना हताने का आदेश दिया था।

लिए मुआवजे की घोषणा की। साथ ही शहीद सैनिकों के अंतिम संस्कार को सार्वजनिक तौर पर करने का फैसला लिया। इन जींजों का अंतर्राष्ट्रीय दबाव बना। तलाकालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल बिलटन ने पाकिस्तान के पीएम नवाज शरीफ को समन किया था और उन्हें सेना हताने का आदेश दिया था।

लिए मुआवजे की घोषणा की। साथ ह









हमने बनाया है, हम ही संवारेंगे

छत्तीसगढ़ राज्य निर्माता  
पूर्व प्रधानमंत्री, भारत रत्न  
श्रद्धेय स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी  
की जयंती पर

कोटि-कोटि नमन



# सुशासन दिवस

## धान बोनस राशि वितरण समारोह



श्री नरेन्द्र मोदी  
माननीय प्रधानमंत्री  
भारत सरकार



श्री विष्णु देव साय  
माननीय मुख्यमंत्री  
छत्तीसगढ़ शासन

25 दिसंबर 2023  
समय - दोपहर 1.00 बजे  
ग्राम-बेन्द्री, अभनपुर, रायपुर (छ.ग.)

मुख्य आमिथि  
श्री विष्णु देव साय  
माननीय मुख्यमंत्री  
छत्तीसगढ़ शासन

विशिष्ट आमिथि  
श्री विजय शर्मा  
माननीय उप मुख्यमंत्री  
छत्तीसगढ़ शासन



किसानों को  
धान बोनस  
भुगतान

3716  
करोड़ रुपए

- राज्य के 18 लाख से अधिक पात्र परिवारों को प्रधानमंत्री आवास की स्वीकृति.
- समर्थन मूल्य पर प्रति एकड़ 21 किंवंटल धान उपार्जन.
- प्रति किंवंटल 3100 रुपये की दर से धान खरीदी.

सबका साथ, सबका विकास - सबका विश्वास और सबका प्रयास

